"पूर्णता गौरवाय" इस ध्येय की सम्प्राप्ति हेतु छात्रों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन के साथ ही निरन्तर विविध उत्सवों और पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। छात्रों में वैश्विक, राष्ट्रीय, मानवीय मूल्यों, नाना समुदाय सहभाव, सामाजिक समरसता और मूलकर्त्तव्यों के अनुपालन के प्रति जागरूकता लाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा गत वर्षों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए है।

1. **गणेशोत्सव –** श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के चन्द्रमौलि छात्रावास में भारतीय परम्परा के अनुरूप सानन्द गणेशोत्सव का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2015-16 में **'गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषदः पाठात्मकमनुष्ठानम्'** तथा वर्ष 2019-20 में **'उत्सवप्रियाः खलु मानवाः'** इस शीर्षक पर यह उत्सव आयोजित किया गया। विघ्वविनायक देव की आराधना से सभी के मन में सत्य, प्रेम, शान्ति, एकता जैसे वैश्विक मूल्यों का आविर्भाव होता है तथा छात्र धार्मिक उत्सव परम्परा से जुड़ कर अपनी संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करने हेतु प्रेरित होते है।
2. **सांस्कृतिक कार्यक्रम –** विश्वविद्यालय द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्र अपनी विशिष्ट प्रतिभा और विचारों को प्रस्तुत करते है । प्रस्तुत कार्यक्रम में छात्रों का महापुरूषों से सम्पर्क होता है, जिससे वे उनके जीवनचरित्र, जीवन-आदर्शों से अधिप्रेरित होकर अपने जीवन में उनको प्रस्थापित करते हैं। यह कार्यक्रम छात्रों में राष्ट्रीय, वैश्विक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का विकास करता है।
3. **वार्षिकोत्सव –** छात्रों में विशेषतया नाना समुदाय सहभाव और सामाजिक समरसता जैसे गुणों के विकास हेतु वार्षिकोत्सव का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में किया जाता है। प्रस्तुत कार्यक्रम में छात्र विविध गतिविधियों में सामूहिक रूप से भाग लेते हैं, जिससे उनकी आन्तरिक शक्तियों का विकास होता है तथा उनमें नेतृत्वशक्ति, भ्रातृत्वभावना, समायोजन की भावना, आत्मविश्वास, उत्साह और आनन्द का संचार होता है।
4. **गुरुपूर्णिमा –** विश्वविद्यालय परिसर में प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को पौराणिक रीति से भगवान् वेदव्यास की पूजा अर्चना करके गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव के माध्यम से छात्र भगवान् वेदव्यास के जीवन चरित्र, गुरु-शिष्य परम्परा और गुरु के महत्व से अवगत होते है, जिसके फलस्वरूप उनके हृदय में शास्त्रों तथा गुरु के प्रति आदर भाव बढता है, मानवीय मूल्यों का संचार होता है तथा गुरु-शिष्य सम्बन्ध दृढ होता है।
5. **श्रीप्रमुख स्वामी महाराज द्वार का लोकार्पण कार्यक्रम –** बीएपीएस स्वामी नारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज के सौजन्य से श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रमुख द्वार का निर्माण किया गया। इस उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय द्वारा एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप छात्रों में श्रद्धा भाव, दान की भावना, सात्विक विचार इत्यादि गुणों का विकास हुआ।
6. **सरस्वती पूजा** – संस्कृत वाङ्मय में सरस्वती देवी को विद्या की देवी कहा गया है। छात्रों में संस्कृतशास्त्र, भारतीय संस्कृति के प्रति सद्भाव उत्पन्न हो तथा सरस्वती देवी के प्रति आदर बढे इस उद्देश्य से **'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'** इस निर्धारित शीर्षक के साथ यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा संचालित किया जाता है।

7. **“संस्कृतवाङ्मये गोतत्त्वविमर्शः” विषय पर व्याख्यान –** संस्कृत वाङ्मय में गौमाता का विशिष्ट महत्त्व प्रतिपादित है। छात्रों में गोसेवा और गोसंवर्धन की भावना के आविर्भाव के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी फलश्रुति प्रत्येक प्राणी के प्रति छात्रों के हृदय में पूज्यभाव के विकास के रूप में देखने को मिली। भारत देश में गाय को माता कहने की आस्था इस प्रकार के कार्यक्रम से दृढ होती दिखाई देती है।